बोध-वाक्य

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं व्रतं सहचित्तमेषाम् । समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभिसंविशध्वम् ॥	(अथर्व वेद ६.६४.२) हे बंधुओं! हमारे विचार समान हों । हमारी सभा सबके लिए समान हो । हम सबका संकल्प एक समान हो । हम सबका चित्त एक समान भाव से भरा हो । एक विचार होकर अपने कार्य में एक मन से लगे । इसीलिए हम सबको समान मौलिक शक्ति मिली है ।

केशवसृष्टि समाचार

मासिक

वर्ष १०, अंक १ — मूल्य रु. १०/-

जनवरी २००९ — वार्षिक रु. ५०/-

संपादक : महावीर प्रसाद शर्मा

कार्यकारी संपादक : लक्ष्मण गुप्ता, शोभाताई थिटे

संपादक मंडल : विजयालक्ष्मी सामवेदी, सत्यदेव बंका, जगदिश्चंद्र पाटील।

कार्यालय : केशवसृष्टि, उत्तन, भाईंदर, जि. ठाणे.

दूरभाष : २८४५०२४७, २८४५२८५५

यह पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक सुरेश भगेरिया द्वारा केशवसृष्टि के लिए **युनिटी आर्ट ऑफसेट** ३०२, वडाला उद्योग भवन, वडाला, मुंबई - ३१ से मुद्रित और केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, जि. ठाणे से प्रकाशित हुई है.

अंतरंग .....

कार्यवाह की कलम से ४

श्रीरामेश्वरलाल जी काबरा का अमृत महोत्सव ५

भारतीय संस्कृति और केशवसृष्टि ८

अध्ययन यात्रा - भ्रमण १२

वृक्षमित्र पुरस्कार से सम्मानित १३

समाचार १४

संपादकीय

हमारा इतिहास इस बात का गवाह है कि जब हम भारतीय निजी स्वार्थवश और मिथ्याभिमान की रक्षाहित परस्पर लड़े और टुकड़ों में बंट गए तब मुट्ठी भर विदेशी आततायियों ने हमारी स्वतंत्रता का हरण किया और हमें पराधीन बनाया। इनके विपरीत हम जब जब राष्ट्रहित और समाजहित में आपसी भेदभाव भूलकर और क्षुद्र स्वार्थों को त्यागकर संगठित हुए, हमने बड़ी से बड़ी राष्ट्रीय आपदा को मात दी।

एक ओर आर्थिक मंदी और दूसरी ओर पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा निरंतर की जा रही हिंसा ने देश को झकझोर दिया है। उधर पाकिस्तान के इरादे भी कुछ नेक नहीं लग रहे हैं। वह किसी न किसी बहाने भारत पर युद्ध थोपना चाहता है। ऐसे में देश के प्रत्येक नागरिक को देश और समाज के हित में सोचना और अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए। हमें अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर खर्चों में कटौती करनी चाहिए और राष्ट्रहित और समाजहित में अपनी बचत लगानी चाहिए।

युद्ध में देश की एकता और अखंडता तथा स्वतंत्रता के लिए अनेक सैनिक वीरगति को प्राप्त होते हैं। हमें उनके परिवारों की सहायता करनी चाहिए। देश की सशस्त्र सेनाओं में युवकों की नितांत आवश्यकता है, युवाओं को इस दिशा में भी सोचना चाहिए। कभी तो शिवाजी हमारे घर अवतरित हो और कभी तो हमारे परिवारों की माताएं जीजामाता कहलाएं।

संपादक

कार्यवाह की कलम से...

महोत्सव में आपका स्वागत है।

उत्तन की इस भूमि पर जिसे आज हम प्रेम से केशवसृष्टि कहते हैं, २५ वर्ष पूर्व जब पहली बार कुछ संघ स्वयंसेवकों ने अपने कदम रखे तब इस भूमि को किस संघर्ष से गुजरना है और आगे चलकर इसने कैसा विशाल रूप धारण करना है इसका अंदाज शायद ही किसीको होगा। संघ स्वयंसेवकों के लिए शिविर स्थान ढूँढते ढूँढते कुछ कार्यकर्ता यहां तक पहुंचे और शिविरों के साथ कृषि, आयुर्वेद तथा भारतीय शिक्षा के कार्यों की भी नींव रखी गयी।

लेकिन स्थानिक जनता के मन में संशय का भाव था और उसीसे जन्म लेनेवाला विरोध का भी अहसास था। संघ की कार्यपद्धति का अनुसरण करते हुए उस समय के प्रमुखों ने इस संघर्ष का सामना किया। यह भारत भूमि है और हम मां भारती के सेवक यहां सेवा के भाव से आये हैं, इस तथ्य को लोगों को समझाने के साथ कभी कटु प्रसंग खड़ा हो गया तो अपनी तथा कार्य की सुरक्षा भी करने में उन्होंने पूरी जिम्मेदारी निभायी। यही संघ संस्कार है। मंदीर, मठ या बड़ी बड़ी ऐतिहासिक वास्तुएं अवश्य खड़ी होनी चाहिए। उससे हमारा वैभव और संपन्नता का सुखद दर्शन होता है। लेकिन प्रसंगवशात् कोई संकट आया या संघर्ष का प्रसंग खड़ा हो गया तो उसका भी उतनी ही फूर्ति से सामना करते हुए अपनी सुरक्षा करना यह वास्तव में संघ का संस्कार है। इसीलिए जब एक समय केशवसृष्टि के स्थान पर कुछ भ्रमिष्ट लोगों ने हमला किया तो अपनी शक्ति का परिचय देने के लिए मुंबई की शाखा के स्वयंसेवक हजारों की संख्या में यहां पहुंचे। उसके लिए निमित्त बना था भगवान श्री सत्यनारायण महापूजा का! उस वर्ष जो महापूजा हुई और उसके बाद भी जो हर वर्ष महापूजा के निमित्त हजारों स्वयंसेवक यहां पहुंचे, उससे संघर्ष पर उतरे हुए लोगों का भ्रम टूट गया। विराट दर्शन के बाद जैसे अर्जुन का मोह नष्ट हो गया वैसे ही विशाल महापूजा के मात्र आयोजन से ही ९० प्रतिशत संघर्ष मिट गया।

केशवसृष्टि महापूजा की यह प्रारंभिक स्थिति अब केवल एक इतिहास बनकर रह गयी है। आज केशवसृष्टि के आसपास के सभी लोग इसे अपना ही हिस्सा मान रहे हैं। हमें इतिहास को कभी भूलना नहीं चाहिए। लेकिन इतिहास के पन्नों में उलझकर भी नहीं रहना है। उज्वल भविष्य की ओर स्वयंसेवक की दृष्टी होती है। इसीका यह सुपरिणाम है कि आज इस धरती पर समाजसेवा के कई प्रकल्प फल फूल रहे हैं। और महापूजा के अवसर पर आप जैसे हजारो संघ प्रेमी यहां पधारते हैं। आप सभी का हृदय से स्वागत है।

इस वर्ष की महापूजा के निमित्त सांस्कृतिक मंच, गुरु ग्रंथ से शब्द कीर्तन, दोनों पाठशालाओं के छात्रों ने बनायी अनेक प्रदर्शनियां, वैद्यकीय शिविर, रक्तदान और खिचड़ी-कढी का महाप्रसाद ऐसे अनेक आयोजन है। आप सभी कार्यक्रमों का अवश्य आनंद लें। इस अवसर पर संघ परिवारों का स्नेहमिलन होता हैं। पुराने साथी प्रेम से गले मिलते हैं। नये परिचय होते है। केशवसृष्टि में कार्यरत संस्थाओं का विकास देखकर खुशी का अनुभव करनेवाले आप आप्तजन हैं। परिसर का मनसोक्त भ्रमण करें और यहां की खुली हवा को अपने अंदर समा लें।

केशवसृष्टि का विकास क्रमशः होते गया। कोई पूर्व योजना से नहीं हुआ। विकास की प्रक्रिया में राष्ट्रहित और समाजसेवा का भाव तीव्र होने से एकेक प्रकल्प आता गया और सृष्टि की रचना होती गयी। इसी तरह आगे भी विकास की गति तेज रहेगी, यह हमारा विश्वास है। आदर्श सामाजिक संस्था जीवन खड़ा करने की इस प्रक्रिया में आप सभी का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहभाग है। यही अपनी आंतरिक शक्ति है। केशवसृष्टि का आज का रूप देखकर कई लोगों के मन में ऐसे प्रकल्प स्थान-स्थान पर खड़े करने की प्रेरणा जग रही है। इसे देखकर पूर्व योजना से ऐसे सेवाभावी राष्ट्रहितैषि प्रकल्प खड़े करना अब संभव हो गया है। इसका ऐसा विस्तार देशहितकारी होगा यह निश्चित है। आइए। हम सब मिलकर मातृभूमि की सेवा का निश्चय करें और प्रगति की दिशा में आहे बढ़े! धन्यवाद!

– ***सतीश सिन्नरकर*** – कार्यवाह, केशवसृष्टि ■

रामरत्ना विद्यामंदिर के संस्थापक न्यासी

श्री रामेश्वर लाल जी काबरा का अमृत महोत्सव

२८ दिसंबर २००८ रामरत्ना विद्यामंदिर के साथ साथ केशवसृष्टि के इतिहास में एक सुखद एवं प्रेरणादायक दिवस के रूप में जाना जाएगा। इस दिन रामरत्ना विद्यामंदिर की ओर से इसके संस्थापक श्री रामेश्वर लाल जी काबरा (प्रसिद्ध नाम 'बापूजी') के अमृत महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। यह आयोजन सत्कार मूर्ति के प्रशस्तिगान को नहीं बल्कि उनके निस्वार्थ और समर्पण भाव से राष्ट्र एवं समाज हित में चुपचाप किए जा रहे सेवा कार्यों को समर्पित था ताकि शेष समाज विशेषकर विद्यार्थी और युवा वर्ग ऐसी विभूतियों और उनके परोपकारी कार्यों से प्रेरणा ले सके।

हमारे ''बापूजी''

केशवसृष्टि के मानबिंदू रामरत्ना विद्यामंदिर के श्रद्धा पुरुष 'बापूजी'। इनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व को एक दोहे के माध्यम से समझा जा सकता है, ' बड़े बड़ाई ना करें, बड़े न बोले बोल, रहिमन हिरा कहां है, लाख टका मेरा मोल।' रामरत्ना विद्या मंदिर के नींव के पत्थर और पालक पुरुष, वनवासी क्षेत्रों में कार्यरत एकल विद्यालय से भी सक्रिय रूप से जुड़े हुए है। अपनी आयु के ७५ वर्ष पूरे करने पर भी नवयुवकों की तरह सक्रिय 'बापूजी' के लिए केशवसृष्टि परिवार की ओर से 'जीवेत् वर्ष शतं' की हार्दिक शुभकामनाए।

अमृत महोत्सव का मुख्य समारोह शाम ५.३० बजे राम रत्ना विद्यामंदिर के क्रीडांगण में आयोजित किया गया था। समारोह में स्वामी सत्यमित्रानंद गिरीजी और स्वामी गोविंद देव गिरीजी के साथ महाराष्ट्र तथा गुजरात क्षेत्र के माननीय संघ चालक डॉ. अशोक रावजी कुकडे श्री हरि, सत्संग समिति और वन बंधु परिषद के प्रमुख कार्यकर्ता श्री श्याम जी गुप्त विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित थे।

ठीक ५.३० बजे कार्यक्रम का श्रीगणेश गणेश वंदना से किया गया। सिद्धीप्रदाता गणेश जी की वंदना पर भक्तिभाव से परिपूर्ण नृत्य केशवसृष्टि के कृषि विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने प्रस्तुत किया। इसके बाद कृषि विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने शक्ति का आह्वान करते हुए शक्ती की देवी की महाराष्ट्र के परम्परागत वीर रस पूर्ण नृत्य से आराधना की। कुशल मंच संचालिका ने कृषि विद्यालय के विषय में संक्षिप्त जानकारी देते हुए बताया कि कृषि तथा उससे संबंधित अन्य विषयों में डिप्लोमा पाठ्यक्रम में इस समय १२० विद्यार्थी शिक्षा ले रहे है जिनमें से ७० तो छात्राएं है। केशवसृष्टि के कृषि विद्यालय में छात्राओं की संख्या छात्रों की अपेक्षा अधिक होने का कारण बताया गया कि अभिभावकों के विचार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्वावधान में चलनेवाले विद्यालय में ही छात्राएं सब प्रकार से सुरक्षित है। उन्होंने बताया कि यशवंतराव चव्हाण खुला विश्व विद्यालय ने B.Sc. (Agriculture) के लिए केशवसृष्टि कृषि विद्यालय को अपनी मान्यता दे दी है। ५ वर्ष की अत्यंत अल्पावधि में केशवसृष्टि कृषि विद्यालय को मिली मान्यता और प्रतिष्ठा गौरव का विषय है। इसके साथ ही, कृषि विद्यालय के छात्रों ने नयनाभिराम वृक्ष नृत्य किया।

इसके बाद रामरत्ना विद्या मंदिर के छोटे-छोटे छात्रों ने राष्ट्रभक्ति का एक गीत 'इज़्ज़त वतन की हम से है, ताकत वतन की हम से है'' प्रस्तुत किया। इसके बाद रामरत्ना विद्यामंदिर

की ११वीं - १२वीं के छात्रों ने 'मोहे रंग दे बसती' शीर्षक वाले गीत लोकप्रिय गीत पर जोश और ऊर्जा से भरा नृत्य प्रस्तुत किया। इसके बाद राम रत्ना विद्या मंदिर के नन्हें मुन्ने छात्रों ने अपनी संगीत अध्यापिका के साथ मिलकर मीरा बाई का प्रसिद्ध भजन 'राम रतन धन पायो' प्रस्तुत किया। इन सांस्कृतिक

प्रस्तुतियों के समय मंच संचालन हिंदी-संस्कृत की विदूषी अध्यापिका श्रमती सामवेदी ने किया।

इसके बाद सत्कार समारोह आरंभ हुआ। मंच संचालन का कार्य श्री विमल जी केडिया के कुशल हाथों में आ गया। उन्होंने अपने बेहद चुटीले अंदाज में बताया कि आज का आयोजन कितनी रुकावटों को पारकर मूर्तरूप ले सका। उन्होंने बताया कि आज से लगभग ३ माह पहले एक विवाह समारोह में श्री महेंद्र जी काबरा से मुलाकात हुई तो विमल जी ने अनायास ही पूछ लिया कि बापू जी ७५ वर्ष के कब होंगे, महेंद्र जी ने बताया इसी वर्ष २८ दिसंबर २००८ को, क्यों? विमल जी ने अपने दिमाग में पलरही योजना संक्षेप में श्री. महेंद्र भाई को बतायी, महेंद्र जी ने बापू जी का स्वभाव जानते हुए कहा कि यह योजना परवान नहीं चढ़ेगी। विमलजी ने फिर भी बापू जी के सामने अपना प्रस्ताव रखा। बापू जी ने यह कहते हुए सख्त मना कर दिया कि वे व्यक्ति पूजा और प्रशंसा की गलत परंपरा का सूत्रपात नहीं करना चाहते। बापू जी पूज्य स्वामी गोविंद देवगिरि का श्रद्धापूर्वक सम्मान करते थे यह जानते हुए स्वामी जी को पत्र लिखकर अनुरोध किया गया कि वे बापूजी को इसके लिए मनाएं। स्वामी जीने पत्र लिखकर बापूजी को आदेश दिया कि वे अमृत महोत्सव का प्रस्ताव स्वीकार कर लें। बापू जी स्वामी जी का आदेश तो टाल नहीं सकते थे। किंतु उनके आदेश को उनके गुरू (स्वामी सत्यमित्रानंद) जी से बदलवा सकते थे। उन्होंने अपने मन की बात बताते हुए स्वामी सत्यमित्रानंद जी को पत्र मिलते ही बापूजी को फोन पर आदेश दिया कि अमृत महोत्सव का आयोजन किया जाएगा और वे स्वयं उस कार्यक्रम में उपस्थित होंगे। यह निर्णय पुणे में स्वामी गोविंद देव गिरि जी को भी बता दिया गया और उन्होंने भी उस कार्यक्रम में उपस्थित होने की इच्छा व्यक्त की है। बापूजी के पास बच्चों के आग्रह और संत महात्माओं की आज्ञा को सम्मान देने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था। तत्पश्चात अमृत महोत्सव के आयोजन की तैयारी आरंभ कर दी गई। कार्यक्रम के दोन हेतु रखे गए। १. बापूजी का जीवन सबके सामने आए और २. बापू जी जिस जिस क्षेत्र में काम कर रहे हैं, वह सामने आए।

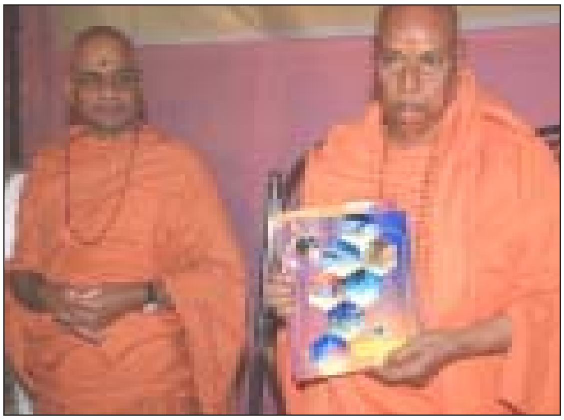

अमृत महोत्सव के अंतर्गत शुभकामानाओं और आशीर्वादों का आरंभ वनबंधु परिषद के प्रमुख कार्यकर्ता श्री श्याम जी गुप्त ने किया। उन्होंने बताया कि श्री रामेश्वरलाल काबरा जी ने रामरत्ना विद्या मंदिर की स्थापना की किन्तु उसके न्यास का अध्यक्ष स्वयं न बनकर अपने पुत्र श्री महेंद्र काबरा को बनाया, क्योंकि वे स्वयं वनबंधु परिषद द्वारा संचालित एकल विद्यालयों का काम देखते हैं। उन्होंने बताया कि एकल विद्यालयों के माध्यम से ३०,००० ग्रामों की १,००,००० ग्राम समितियों के १५,००,००० बच्चे एकल विद्यालयों में बापू जी का अमृत महोत्सव मना रहे होंगे।

उन्होंने बताया कि आज हम यहां पूरे देश और पूरे विश्व को केशवसृष्टि बनाने का संकल्प लेने आए हैं और इस निमित दो संत महात्मा का सान्निध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। केशवसृष्टि जिस महापुरुष के नाम पर स्थापित हुआ है, वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार एक अभावग्रस्त किंतु संस्कारी परिवार से संबंध रखते थे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नामक वट वृक्ष लगाया जिनकी प्रेरणा से केशवसृष्टि की स्थापना हुई है। यहां के कार्यों का लाभ आसपास के

अभाव ग्रस्त क्षेत्रों, गांव खेडों तक भी पहुंचना चाहिए। आतंकवाद का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा, १९८० के दशक में आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए माननीय भाऊराव जी देवरस के नेतृत्व में वनवासी बंधुओं के बीच शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु एकल विद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया। वनबंधु परिषद श्री हरि सत्संग समिति आदि संस्थानों के माध्यम से वनबंधुओं की समस्याएं सुलझाई जा रही हैं, शहरो-नगरों की संपन्नता का प्रसाद उनके बीच भी बांटा जा रहा है, अल्प संख्यक आधारित तुष्टिकरण की नीति का परोक्ष संदर्भ देते हुए उन्होंने कहा कि २० करोड़ के आतंकवाद से लड़ने के लिए हमें ३० करोड़ वनबंधुओं के रा. सु.र. तैयार करने होंगे। इस आतंकवादका मुकाबला लोकतांत्रिक ढंग से वनबंधुओं को साथ लेकर ही किया जा सकता है। और उद्देश्य के लिए बापूजी जैसे समर्पित और विनयशील महापुरुष का अमृत महोत्सव मनाना बहुत जरूरी है ताकि समाज यह जान सके कि वनवासी और अभावग्रस्त लोगों की क्या स्थिति है, उनके बीच आज कैसा और कितना काम हो रहा है, और आज की तारीख में वन बंधुओं की क्या क्या जरूरते हैं और उन्होंने दूर करने के लिए हम क्या कर सकते हैं।

क्षेत्रीय संघचालक
श्री अशोकरावजी कुकड़े

संघ कार्य की दृष्टि से महाराष्ट्र और गुजरात के क्षेत्रीय संघ चालक माननीय डा. अशोक राव जी कुकड़े ने इस अवसर पर संबोधित करते हे कहा कि श्री रामेश्वर लाल जी काबरा बचपन से ही संघ के स्वयंसेवक हैं, अपने परिवार के तथा संघ के संस्कारों को सम्मान देते हुए श्री रामेश्वरलाल काबरा ऊर्फ बापूजी ने अपने व्यवसाय के साथ समाज सेवा का बीड़ा उठाया। उन्होंने रामरत्ना विद्यामंदिर को एक संस्कार केंद्र बताया और कहा कि ऐसे तीर्थ स्थानों की स्थापना और उनके सुचारू संचालन में मार्गदर्शन के लिए बापूजी का आभार मानना ही चाहिए, इससे ऐसे कार्य करने वालों को प्रोत्साहन मिलता है और अन्य समाज बंधुओं को उनका अनुकरण करने की प्रेरणा और साहस मिलता है। रामरत्ना विद्या मंदिर की उपयोगिता और महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि उच्च वर्गीय समाज को संस्कारों की अधिक आवश्यकता रहती है क्योंकि संपन्न वर्ग या उच्च वर्गीय समाज जिस मार्ग पर चलता है शेष समाज भी उसी मार्ग पर चलता है। महाजनाना गतासो पंथा, स्वामी गोविंद देव गिरिजी - ने भी विमल केडिया के पत्राचार और उसके बाद हुई पुरी कार्रवाई का उल्लेख करते हुए बताया कि यह सम्मान इसलिए भी आवश्यक था कि समाज में जो लोग भ्रष्ट है, भ्रष्टाचार करते हैं और इसके बावजूद बड़ा दानवीर समाजसेवी आदि आदि दिखने के लिए अपना सम्मान आयोजित करवाते हैं, किंतु वास्तविक समाज पुरुषों को जो चुपचाप समाजविकास में अपना योगदान देते रहते हैं, सामान्यतः उन्हें तो कोई सम्मानित नहीं करता, उन्होंने भी इस बात पर जोर दिया कि ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से सम्मान मूर्ति के कृतित्व (कार्यों, गतिविधियों, व्यक्तिगत गुणों आदि) का तो प्रशस्तिगान हो ही साथ ही शेष समाज को उसके साथ जुड़ने का आह्वान भी करना चाहिए। उन्होंने बताया कि बापूजी ने कभी असत्य अथवा भ्रष्ट आचरण का सहारा कभी नहीं लिया। उन्होंने अपने शब्दों को विराम देने से पहले बापूजी को एक आदर्श व्यक्ति बताया और कहा कि तन, मन, धन से समाज की सेवा करनेवाले का सम्मान अवश्य किया जाना चाहिए, हम ऐसा कुछ करें जिससे समाज हमें याद रखे।

भारतीय संस्कृति और केशवसृष्टि

संस्कृति अर्थात् दैनंदिन जीवनशैली, सामाजिक जीवन, पूजा-उपासना विधि, उत्सव-त्यौहार आदि का समुच्चय, इस संदर्भ में भारतीय संस्कृति का प्रत्येक अवयव प्रकृति के साथ जुड़ा है। भारतीय जनमानस प्रातः उठते ही अपने दोनों हाथों को आँखों के सामने लाकर आँखे खोलता है और कहता है,

करागे्र वसते लक्ष्मी, करमध्ये सरस्वती।

करमूलेतु गोविंदः, प्रभाते कर दर्शनम्॥

कर (हाथों) के अगले भाग में लक्ष्मी (धनसंपदा), मध्यम भाग में सरस्वती (विद्या-विवेक) और पिछले अथवा मूलभाग में गोविंद (ईश्वर) का वास होता है। अतः प्रातः उठकर सबसे पहले इसका दर्शन करना चाहिए। हाथों के दर्शन का अर्थ हमें अपने कर्म को याद रखना और उसका अनुपालन करना चाहिए।

फिर अपनी शय्या से नीचे पांव रखते हुए वह प्रकृति के एक महत्त्वपूर्ण अवयव पृथ्वी पर पांव रखते हुए कहता है :

समुद्र वसने देवि, पर्वतस्तन मंडले

विष्णु पत्नी नमस्तुभ्यम् पादस्पर्शम् क्षमस्व में॥

हे समुद्र रूपी वस्त्रों से आवृत (ढकी हुई) देवी, जिसके पर्वत मां के पीन पयोघरों के समान हैं, ऐसी भगवान विष्णु की मार्या (लक्ष्मी) मैं तेरे पूज्य शरीर पर पांव रखने जा रहा हूं, इसके लिए क्षमा करना। यहां भारतीय संस्कार धरती को मां और सबको अन्नजल, धनधान्य देनेवाली लक्ष्मी कहता है, प्रत्येक शुभ कार्य के आरंभ में विशेषकर भवन निर्माण और कृषि में भूमिपूजन किया जाता है, उसे नैवेद्य अर्पित किया जाता है।

प्रकृति का एक और अति महत्त्वपूर्ण अवयव 'जल' है। यह कितना महत्त्वपूर्ण है इसका पता इसी बात से चल जाता है कि बड़े बड़े विद्वान 'जल ही जीवन है', ऐसा कहते पाए जाते हैं। अर्थात् जल के बिना मनुष्य, पशु, वनस्पति, कीट पतंग और अतिसूक्ष्म जीवधारियों का जीवन ही असंभव हो जाए। आज वैज्ञानिक चंद्र, मंगल, शुक्र और बुध जैसे ग्रहों पर जीवन की संभावनाएं तलाशते हुए सबसे पहले वहां जल की खोज करते हैं, यदि वहां जल या उसकी, किसी भी रूप में संभावना का पता चलता है तो मान लिया जाता है वहां भी जीवन हो सकता है। पूजा अनुष्ठान के समय एक कलश में पवित्र जल भर कर और उसमें आम के पत्ते डालकर वरुण देव के रूप में उसकी पूजा की जाती है। मानव सभ्यता का विकास नदियों के किनारे हुआ। क्योंकि वहां पीने और कृषि के लिए जल आसानी से मिल जाता था। बाद में मनुष्य ने तालाबों, कुओं आदि में जल संरक्षण आरंभ किया।

नदी किनारे सभ्यता के विकास का पहला चरण खेती अथवा कृषि था। भारत वर्ष में नदियों का तो मानों जाल बिछा हुआ था, परिणामस्वरूप यहां के जनमानस ने कृषि से ही अपनी आजीविका आरंभ की। कृषि से उसने न केवल अपना पेट भरा बल्कि अन्य समाज बंधुओं और पशुओं का भी लालन-पालन किया। बचपन में कृषि संबंधी एक पाठ में पढ़ा था,

''उत्तम खेती, मध्यम बान, नीच चाकरी भीख निदान''

अर्थात् खेती आजीविका का सर्वोत्तम साधन, व्यापार को मध्यम आजीविका और नोकरी को उससे नीचे तथा भीख मांगने को लाचारी बताया गया था।

इसीलिए, विश्व में श्रेष्ठतम् सभ्यता, भारतीय सभ्यता अथवा संस्कृति के विकास का मूलाधार कृषि ही रहा, आज भी भारत की लगभग ७०% जनसंख्या कृषि पर अपनी आजीविका चलाती है। जो लोग कृषि नहीं भी करते, उनके जीवन में कृषिजन्य संस्कार फूट-फूटकर भरे हुए हैं।

कृषि के विकास के साथ ही उसमें पशुओं की सहायता लेने की आवश्यकता भी महसूस हुई। भारत भूमि पर गोवंश को इस काम के लिए अब तक श्रेष्ठतम् पाया गया है। गाय का दूध नवजात शिशुओं से लेकर वृद्धावस्था में अपनी दुर्बल काया से तालमेल बैठा रहे मनुष्यों तक सभी के लिए सुपाच्य और पौष्टिक होता है। स्वभाव से गाय सरल स्वभाव की होती है और परिवार के सदस्यों को पहचानती है। गाय के दूध से अनेक पदार्थ बनते हैं जो औषधीय गुणों से भरपूर होते

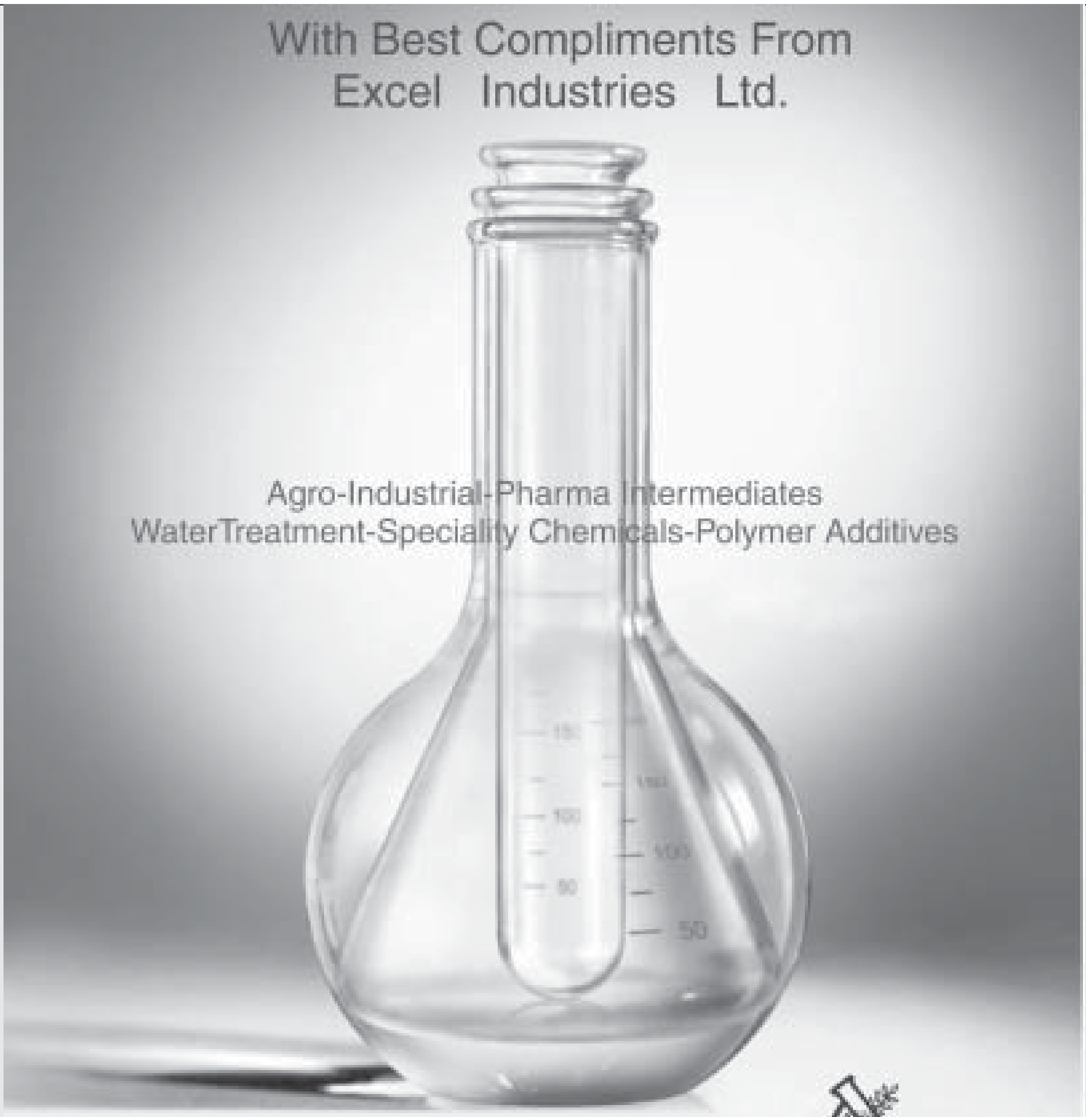

EXCEL

Promise Of Excellence
That Excel Has Always Delivered Upon

Unfaltering quality, fully integrated production systems linked to process technology, innovation, expertise & faster market introductions make us the preferred partner for our clients around the world. By providing solutions that are critical for market leadership, we share a vision to be the world's most trusted Chemical Company.

184-87, S.V.Road,
Jogeshwari (W)
Mumbai 400 102, INDIA
Tel: + 91 22 66464200
Fax:+ 91 22 26783508
Email:
excelmumbai@excelind.com
Website : www.excelind.co.in

हैं। गाय का बछड़ा (नर बालक) बलवान होता है और खेत में हल चलाने, रहट जैसे सिंचाई के साधनों को चलाने, खेतों में पके अनाज की बालियों से भूसा और अनाज अलग करने तथा बैल गाडी चलाने के भी काम आता है। गाय का गोबर और मूत्र भी अब तो इंसानों की अनेक जरूरते पूरी कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति में हजारों वर्षों से गोवंश की पूजा होती आई है और इसके संवर्धन के अनेक प्रयास किए जाते हैं। गाय को हमारे समाज जीवन में कितना महत्त्व प्राप्त है, यह इसी से पता चलता है कि हर पूजा अनुष्ठान में गौग्रास निकालने का प्रावधान है या गौदान करवाया जाता है। गौवंश हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है।

जैसाकि हम सभी जानते हैं, हिमालय पर्वत से लेकर हिंद महासागर तक, कच्छ के रन से लेकर नगालैंड की पहाडियों तक फैले विशाल भूभाग पर अनेक प्रकार की वनस्पतियां एवं जड़ी बूटियां, खनिज पदार्थ, रत्न, कीमती पत्थर आदि पाए जाते हैं। लाखों वर्षों से हमारे ऋषियों मुनियों ने, जो मूलतः वनों में रहते थे, इन वन्य पदार्थों का अध्ययन किया, इन पर प्रयोग और अनुसंधान किए और फिर जनमानस को इनके अनेक प्रयोग बताए। आम, नीम, तुलसी, हल्दी, कुंकुंभ, चंदन आदि अनेक ऐसी वस्तुएं है जिनका हम सांस्कृतिक परंपरा के निर्वाह में दैनिक उपयोग करते हैं और अनायास ही उनसे हमें स्वास्थ्य लाभ होता है। भारतीय संस्कृति के अनन्य अंग आयुर्वेद में इनका विशद और सूक्ष्मतम् विवेचन हुआ है। आयुर्वेद अर्थात् आयु जीवन का वेद ज्ञान, अर्थात् जीवन का ज्ञान-विज्ञान। हमारे दैनिक भोजन में हल्दी, जिरा, धनिया, हिंग, नमक, अदरक आदि का उपयोग सांस्कृतिक परंपरा के रूप में होता है किन्तु इनका स्वास्थ्य पर भी लाभकारी प्रभाव पड़ता है।

भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवयव गुरुकुलशिक्षा पद्धति है जिसके अंतर्गत शिक्षा ग्रहण करने योग्य आयु आने पर शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण करने गुरुजी के आश्रम में जिसे गुरुकुल कहा जाता था, जाते थे और जबतक शिक्षा पूरी नहीं हो जाती थी, वहीं रहते थे। गुरुकुल में सबके साथ समान व्यवहार होता था। वह आकर सभी छात्रों की अपनी पृष्ठभूमि (परिवारिक स्थिति) भूल कर मन लगाकर विद्या और संस्कार ग्रहण करने होते थे। गुरु और शिष्यों में वहीं संबंध होता था, जो मातापिता और उनकी संतान में होता था। यही भारतीय समाजजीवन की श्रेष्ठता का मूलाधार था। ऐसे अनेक सांस्कृतिक मूल्य है जिनके बल पर भारतीय संस्कृति विश्व में श्रेष्ठतम कहलाती थी। धीरे धीरे समाज आलसी और भोगवादी होता चला गया, जीवन में आदर्शों की जगह अवसरवादिता और स्वार्थपरता ने जगह ले ली, हमारे संस्कार –

'अपि स्वर्णमयी लंका, न में लक्ष्मण रोचते।
जननि जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसि।

अर्थात् हे लक्ष्मण, यह सोनेसे जड़ी लंका भी मुझे अच्छी नहीं लगती है, मां और मातृभूमि तो स्वर्ग से भी महान होती हैं।

व्यक्तिगत सुख सुविधाओं और महत्वाकांक्षाओं की बलि चढ गए और सदियों तक विदेशियों की परतंत्रता झेली।

किन्तु समय सदा एक सा नहीं रहता। देश को स्वतंत्र करवाने के प्रयास चल ही रहे थे कि १९२५ में डा. केशव बलिराम हेडगेवार (उपाख्य डॉक्टरजी) ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की और उनके माध्यम से भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण का मंत्र फूंका, 'परम वैभवम् नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्' के ध्येय वाक्य को साकार करनेवाले स्वयंसेवकों द्वारा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए चलाए जा रहे प्रकल्पों में एक प्रकल्प मुंबई के उत्तर पश्चिम में उत्तन गांव के पास स्थित केशवसृष्टि है, जिसके अंतर्गत अनेक उप प्रकल्प अपने सनातन भारतीय संस्कारों फिर से जगा रहे हैं और उनके बल पर भारत माता का गौरव बढ़ा रहे हैं।

उत्तन विविध लक्ष्यी कृषि संशोधन संस्था के अंतर्गत भारतीय पद्धति से कृषि को बढ़ावा दिया जाता है। खेतों में चावल और शाक सब्जियां उगायी जाती हैं। रासायनिक उर्वरक के स्थान पर गोबर और कूड़े कचरे से बनी कम्पोस्ट खाद का उपयोग किया जाता है। रासायनिक कीटनाशकों के स्थान पर गोमूत्र और गोबर के उपलों/अंडों को जलाकर बची राख का छिड़काव किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों से यहां एक कृषि विद्यालय संचालित है, जहां इस समय लड़के/लड़कियां कृषि का परंपरागत संस्कार ग्रहण कर रहे हैं और छोटी-मोटी नौकरियों का मुंह देखने की बजाय 'उत्तम खेती' नामक आदर्श और स्वावलंबी व्यवसाय की ओर आगे बढ़ रहे हैं।

इसी प्रकल्प के अंतर्गत केशवसृष्टि के २०० एकड़ में फैले परिसर के भीतर मीठे पानी के दो तालाब निर्माण किए गए हैं। इन तालाबों में जीवन के पर्याय जल का संचय और संरक्षण किया जाता है। अभी तो यह जल हमारी कृषि संबंधी आवश्यकताएं ही पूरी करता है। निकट भविष्य में इस परिसर की अन्य आवश्यकताएं भी इनसे पूरी हो ऐसे प्रयास जारी है, जल संग्रहण और संरक्षण भी एक भारतीय संस्कार है।

केशवसृष्टि गोशाला में इस समय लगभग.... गाय, बछड़ों और बछियाओं

का बहुत ही व्यवस्थित रूप से लालन-पालन किया जाता है। इस गौशाला में सभी देसी गायें हैं, कोई भी विदेशी नस्ल की या संकार नस्ल की गाय नहीं हैं। इन गायों में... गायें ऐसी है जो दूध नहीं देती, वे अपनी दूध देने वाली अवस्था से बाहर आ गई हैं, किन्तु वे किसी भी प्रकार से समाज पर बोझ नहीं है। इस गोशाला में समस्त गोवंश के साथ सनातन परंपरा के अनुसार व्यवहार किया जाता है। समाज में से गोभक्त समय समय पर गौशाला में आते है और विभिन्न प्रकार से गौसेवा करते हैं। इसमें गायों के चारे, घास, लड्डू आदि का खर्च वहन करना भी शामिल है। इस प्रकार गोसेवा का उद्देश्य उस गौमाता को, जिसे युगों युगों से हम मां कहकर पुजते आए हैं, उचित सम्मान देना और लालची नराधम लोगों के अत्याचार से बचाना है। यह गोशाला गोरस, गोमय आदि के विविध उपयोगों से समाज को अवगत करा रहा है ताकि गाय को उसकी उपयोगिता बचाए, न कि केवल धार्मिक भावना।

उत्तन वनौषधि संशोधन संस्था - केशवसृष्टि परिसर में अनेक औषधीय पेड़-पौधे और जुड़ी-बूटियां है जिनकी अनेक साध्य रोगों के इलाज में महत्त्वपूर्ण योगदान बताया जाता है। इनमें से कुछ तो लुप्त होने के कगार पर हैं तो कुछ बड़ी मुश्किल से मिलती है। केशवसृष्टि के इस प्रकल्प के अंतर्गत इन बहुमूल्य जड़ी बूटियों, पेड़-पौधों आदि की रक्षा की जाती है और उनका विकास किया जाता है। इसी प्रकल्प के अंतर्गत पंचकर्म चिकित्सा और विभिन्न आयुर्वेदिक योगों का निर्माण किया जाता है। इनके माध्यम से जीवन के इस परंपरागत सांस्कृतिक विज्ञान को मजबूती प्रदान की जा रही है। आज २०० एकड़ के इस परिसर में ११०० से भी अधिक औषधीय पेड़-पौधे आदि हैं और अन्य अनेक पर अनुसंधान कार्य चल रहा है।

केशवसृष्टि का एक महती प्रकल्प है उत्तन विविधलक्ष्यी शिक्षण संस्था। इस संस्था के अधीन से एक बालविद्यालय चल रहा है, गुरुकुल पद्धति के इस आवासीय विद्यालय में देश विदेश के छात्रों को कक्षा ५ से १२वीं तक सीबीएससी पाठ्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा के साथ साथ भारतीय संस्कार भी दिए जाते है। भारतीय संस्कृति के प्रतीक रूप में एक श्लोक है :

'अयं निजः परावेति गणना लघु चेतसाम।
उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥'

(यह मेरा है यह पराया ऐसा छोटे दिल वाले संकुचित विचार वाले) लोग सोचते हैं। बड़े दिल (उदार विचार) वाले लोगों के लिए तो पूरी धरती एक परिवार अपना परिवार है। ये छात्र छात्रावास में विभिन्न कक्षाओं के छात्रों के साथ परस्पर प्रेमभाव से रहते हैं, एक दूसरे की सहायत्ता-सम्मान करते हुए परिवार के रूप में रहते है और शिक्षा ग्रहण करते हैं। इन्हें शिक्षा एकसंस्कार के रूप में दी जाती है। माता पिता और गुरुजनों का विधिवत सम्मान करना, अनुशासन में रहना इन्हें घुट्टी की तरह पिलाया जाता है। शिक्षक वर्ग भी इनके साथ गुरु के साथ साथ आदर्श अभिभावक का व्यवहार करते है। यहां छात्रों को किताबी शिक्षा प्रदान करने के साथ उनके शारीरिक और मानसिक, बौद्धिक विकास के पर्याप्त अवसर प्रदान किये जाते हैं, इन सबके ऊपर छात्रों को अपने देश अपने समाज से सच्चा प्यार करना सिखाया जाता है। भारतीय संस्कार के रूप में उन्हें समाज के कमजोर और उपेक्षित वर्ग से मिलवाकर उनकी सेवा के लिए प्रेरित किया जाता है।

केशवसृष्टि के इस प्रकल्प के अंतर्गत आस पास के गांव खेड़े के बच्चों और निरक्षरो, वयस्कों को भी शिक्षा का यह सनातन संस्कार प्रदान करने की तैयारी चल रही है। आवश्यक व्यवस्था- संरचना तैयार हो जाने पर भारतीय संस्कारों को बल प्रदान करने वाला यह कार्य भी यथाशीघ्र आरंभ किया जाएगा।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि परमपूज्य डा. केशव बलिराम हेडगेवार जी (आद्य सरसंघ चालक जी) के पद चिन्हों पर चलते हुए उनके स्वप्नों को मूर्त देने के लिए ही केशवसृष्टि कार्यरत है और भविष्य में भी और अधिक प्रभावशाली ढंग से काम करता रहेगा।

जनवरी २००९ माह की प्रेरणास्पद तिथियां

क्र.	दिनांक	त्यौहार
१.	३ जनवरी २००९	सावित्रीबाई फुले जयंती
२.	५ जनवरी २००९	गुरु गोविंदसिंग जयंती
३.	११ जनवरी २००९	छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरमाता जिजाबाई की जयंती
४.	१२ जनवरी २००९	स्वामी विवेकानंद जयंती
५.	१३ जनवरी २००९	लोहड़ी
६.	१४ जनवरी २००९	**मकरसंक्रांति**
७.	२३ जनवरी २००९	नेताजी सुभाषचंद्र बोस जयंती
८.	२६ जनवरी २००९	**गणतंत्र दिवस**
९.	२८ जनवरी २००९	लाला लाजपतराय जयंती
१०.	३० जनवरी २००९	महात्मा गांधी पुण्यतिथी

केशवसृष्टि कृषितंत्र विद्यालय

अध्ययन यात्रा – भ्रमण

कोकण अर्थात् महाराष्ट्र की प्राकृतिक शानोशौतक, यहां सह्याद्रि के लाल रंग के पहाडों की बगल में समुद्र की खाड़ी, खाड़ी में अठखेलियां करती पानी की ऊंची- ऊंची लहरों के बीच जल दुर्ग (अर्थात् सिंधुदुर्ग), प्राचीन मंदिर और उनके साथ साथ गरम पानी उगलते स्रोते, मार्लेश्वर और साफ और सफेद पानी उड़ेलने वाला झरना (जलप्रपात) और समुद्र तट से लगते हुए शांत पानी के 'लगून' (बैक वाटर्स) कोंकण को सदा हर्षाते और सरसाते रहते हैं, कोकण का इतिहास भी बहुत पुराना है, स्वर्ग से भी सुंदर ऐसे कोंकण की प्रकृति का सुखद आनंद लेने के लिए केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय/ महाविद्यालय की शैक्षणिक सहल (अध्ययन यात्रा) का आयोजन किया गया।

केशवसृष्टि कृषितंत्र विद्यालय की शैक्षणिक सहल दिनांक २८ नवंबर २००८ के दिन कृषि विश्व विद्यालय, दापोली पहुंची। सबसे पहले हमें पशु संवर्धन और डेयरी विकास विभाग का दौरा करवाया गया जहां हमने गो वंश, भैंस, बकरी, भेड़, शहामृग (ईमू), खरगोशों के पालन पोषण के बारे में उपयोगी जानकारी दी गई। फिर, हम कृषि उत्पाद प्रसंस्करण विभाग की ओर गए, यहां हमें जैम, जैली, आचार-मुरब्बे, चटनी आदि तैयार करने की आधुनिक जानकारी प्रदान की गई। रबड़ के खेतों की ओर गए तो रबड़ के पेड़ लगाने की प्रक्रिया समझाई गई। इसके बाद विस्तार शिक्षण विभाग फल और शाक सब्जी प्रबंधन, लाखी बाग, औषधीय जड़ी-बूटी तथा पेड़-पौधों की खेती आदि से संबंधित विभागों का दौरा करवाया गया, यह भी बहुत उपयोगी रहा। इसके बाद हमने हर्णे समुद्रतट पर जानकर मच्छीमार बंदर और मछलियों की बिक्री के संबंध में आवश्यक जानकारी प्राप्त की।

दूसरे दिन हमने डेरवण, चिपलून स्थित शिवासृष्टि नामक स्थान का दौरा किया। यह स्थान प्रत्येक विद्यार्थी के साथ साथ छत्रपति शिवाजी से संबंधित इतिहास में रूचि रखनेवाले व्यक्ति के लिए दर्शनीय है। अगली यात्रा आरंभ करने से पहले हमने स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। इसके बाद हमने देवरुख से १६ किलोमीटर दूर और सह्याद्रि के बगल में स्थित एक पहाड़ी पर एक गुफा में स्थित श्री मार्लेश्वर जागृत देवस्थान का दर्शन किया, यहां से, श्री धारेश्वर जल प्रपात से निकलने तथा हवा में बारिश बन कर नीचे आनेवाली जलराशि में सराबोर करके हम आगे बढ़े, हमारा अगला पड़ाव कोकण कृषि विश्वविद्यालय से संबंद्ध सावर्डे कृषि विद्यालय था, यहां हमने विभिन्न फसलों की जानकारी ली और नारियल निकालने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई सीढ़ी का सजीव प्रदर्शन देखा। फसलों के संग्रहालय में प्रदर्शित इस सीढ़ी के अलावा हमने हरी तरकारी लगाने की जानकारी प्राप्त की। कोंकण की यात्रा अर्थात् आनंद पर्व की हरियाली से भरपूर वनक्षेत्र में प्राकृतिक रूप से सुसज्ज नारियल, सुपारी के बाग के बीच मंत्रमुग्ध करनेवाली यात्रा ज्ञानवर्धक, सुखद और आनंददायी रही, वास्तव में इसके लिए अगर, 'आम के आम, गुठली के दाम' कहा जाए तो गलत न होगा।

खैर, प्रकृति के शुद्ध वातावरण का आनंद लेकर हमने आगे की यात्रा आरंभ की।

रत्नागिरी जिले में स्थित गणपति पुले स्थित श्री गणेश जी का दर्शन किया, मालवण का किला, कंकणेश्वर, विजयदुर्ग, सावंतवाडी आदि का दौरा करके हमने वापसी की यात्रा आरंभ की और वापिस केशवसृष्टि पहुंचे।

माधव फ. माली, केशवसृष्टि कृषितंत्र विद्यालय, उत्तन

वृक्षमित्र पुरस्कार से सम्मानित
उत्तन कृषि संशोधन संस्था

समाज को शिक्षा देने वाला एक ऐसा महान प्रकल्प 'केशवसृष्टि' ठाणे जिले में उत्तन नामक गांव के पास स्थित है, इस प्रकल्प में उत्तन कृषि संशोधन संस्था कार्यरत हैं, कृषि शिक्षण देने का काम करके किसानों को, इसी प्रकार शहरी भागों में रहनेवाले लोगों को कृषि पर्यटन के बारे में औरवरिष्ठ नागरिकों के लिए आत्मीयता निर्माण करनेवाले काम ये संस्थाएं कर रही हैं, विभिन्न क्षेत्रों में अनेक समाज सेवा संबंधी योजनाएं ये सभी (६-७) संस्थाएं केशवसृष्टि की छाया के नीचे एक-दूसरे से सहयोग करते हुए और एक-दूसरे का सहयोग लेते हुए कार्यरत हैं।

केशवसृष्टि प्रकल्प के तीन प्रमुख क्षेत्रों के रूप में तीन उप प्रकल्प हैं जो शिक्षा, कृषि एवं औषधीय वनस्पतियों के संरक्षण और विकास को समर्पित है। उत्तन कृषि संशोधन संस्था उनमें से ही एक है जिस की स्थापना सन! १९८४ में की गई थी। संस्था के उद्देश्य निम्नानुसार हैं। १. खेती करना/ करवाना, फलों के बाग बगीचे लगाना, फूलों की खेती करना, नर्सरी लगाना, खेती से जुड़े अथवा खेती के सहायक उद्योगों से संबंधित प्रयोग करना, अनुसंधान करना और इस प्रकार सभी शास्त्रों का विकास करके कृषि क्षेत्रों में अनुसंधानों की जानकारी प्रदान करना और उसका प्रसार करना।

२. ऊपर बताई गई बातों का प्रसार (और प्रचार हो) ऐसे सभी प्रकार के प्रयत्न करना।

३. इसके साथ ही, जो जो संस्थाएं उपरोक्त कृषि संस्था के अतिरिक्त इस प्रकार के प्रयास/उपक्रम कर रही हैं, उनकी अपने ज्ञान अनुभव के आदान-प्रदान से सहायता करना।

४. खेती की और खेती के सहयोगी/ से संबंधित उद्योगों की शिक्षा देना और किसानों/खेतिहरों को स्वावलंबी बनाना।

उपर्युक्त अनेक उद्देश्यों को आंखों के सामने रखकर संस्था काम कर रही है। इस संस्था के अंतर्गत जिन जिन क्षेत्रों में विशेषतापूर्वक काम किया जाता है, उनमें से निम्नलिखित उल्लेखनीय है - १. कम्पोस्ट खाद तैयार करना और खेतों में उसका ही उपयोग करना। फलों और शाक सब्जियों की खेती करना और इनके उत्पन्न की सुरक्षा व्यवस्था करना आदि।

२. कृषक/किसान परिवारों के बच्चों को प्रगतिशील खेती करने के लिए उन्हें कृषि संबंधी विषयों का शास्त्रोक्त/ वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान करने के लिए वर्ष २००५ में उत्तन कृषि संशोधन संस्थाने केशवसृष्टि कृषितंत्र विद्यालय आरंभ किया है। इसके साथ साथ वर्ष २००८-०९ में संस्थाने यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ का दूरस्थ शिक्षण नामक पाठ्यक्रम आरंभ किया है। ऐसी समस्त सूचनाओं को ध्यान में रखकर मीरा-भाईंदर महानगर पालिका उद्यान एवं वृक्ष प्राधिकरण द्वारा उत्तन कृषि संशोधन संस्था को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सोमवार दिनांक १५ दिसंबर २००८ के दिन वृक्षमित्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मीरा-भाईंदर महानगरपालिका के माननीय आयुक्त राजीव जाधव, उपायुक्त संभाजी पाणपट्टे के शुभ करकमलों से कृषि विद्यालय के प्राचार्य श्री सदानंद सामंत महोदय ने प्राप्त किया। इस अवसर पर केशवसृष्टि के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, माननीय अभयजी फणसेकर, श्री सुरेंद्र जी ओभान और कृषि संस्था के कोषाध्यक्ष श्री हेमंत म्हात्रे विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर कृषि विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सदानंद सावंतजी ने केशवसृष्टि और इसके विभिन्न प्रकल्पों की अद्यतन जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि कृषि विद्यालय में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (आवासीय) में ५० छात्र और ७० छात्राएं अध्ययनरत हैं। छात्राओं की अधिक संख्या का एक प्रमुख कारण उनके अभिभावकों का विद्यालय के प्रबंधन में अटूट विश्वास और भारतीय संस्कारों के प्रति आग्रह है। उन्होंने बताया कि बी.एस्सी. कृषि विज्ञान पत्राचार पाठ्यक्रम में पहले ही वर्ष २०९ छात्र-छात्राओं ने प्रवेश लिया है और वे अध्ययनरत हैं। श्री सामंत ने इस अवसर पर मीरा-भाईंकर महानगरापालिका के सामने प्रस्ताव रखा कि मीरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्र में लैंडस्केपिंग तथा गार्डन-लॉन अनुरक्षण के कार्य यदि हमारे छात्रों को दिए गए तो आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की सहायता होगी और उनके ज्ञान का सदुपयोग होगा। इसके साथ ही उन्होंने महानगरापालिका के समक्ष प्रस्ताव रखा कि वह (एमबीएमसी) कृषि विद्यालय के साथ मिलकर केशवसृष्टि में कृषि मेले का आयोजन करे तो कृषि विद्यालय के शिक्षक और वरिष्ठ छात्र आसपास से आनेवाले किसानों के साथ कृषि की अत्याधुनिक तकनीकों का ज्ञान बांटेंगे और उनकी कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान देने का प्रयास करेंगे।

केशवसृष्टि में संपन्न हेमंत शिविर

दिसंबर २००८ माह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मुंबई के विविध भागों एवं विभागों के हेमंत शिविर, केशवसृष्टि में संपन्न हुए। दिनांक ६, ७, ८, दिसंबर २००८ को दिंडोशी भाग एवं बोरिवली भाग का शिविर संपन्न हुआ। उसके बाद दि. २६, २७, २८ दिसंबर को पार्ले विभाग और, परेल विभाग का शिविर संपन्न हुआ। सभी हेमंत शिविरों में सहभागी हुए शिविरार्थी तथा व्यवस्था विभाग के स्वयंसेवकों की संख्या लगभग ९०० थी।

रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी द्वारा आयोजित अग्निशमन प्रशिक्षण

केशवसृष्टि परिसर में कार्यरत सभी संस्थाओं के कर्मचारियों के लिए रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी की ओर से दिनांक २८ दिसंबर २००८ को अग्निशमन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण में मुख्य रूप से आग के मुख्य कारण और उनपर इस्तेमाल किये जानेवाले अग्निशमन उपकरणों की जानकारी तथा उनके उपयोग करने की विधीयां सिखाई गई। आग लगने के बाद प्राथमिक रूप से जो सावधानियां बरतना चाहिए उसका प्रात्यक्षिक भी प्रस्तुत किया गया। फायर प्रोटेक्शन इंजीनियर श्री वसंत जाधव ने सभी सहभागीयों को मार्गदर्शित किया।

केशवसृष्टि परिसर में कार्यरत सभी संस्थाओं के कर्मचारी और केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय के विद्यार्थी प्रशिक्षण में सहभागी हुए थे।

उमेश मोरे, कार्यकारी अधिकारी, संकुल व्यवस्थापन
रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी

वसंत स्मृति संचालित

किसन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम

भाईंदर रेल्वे स्टेशन से केवल १२ कि.मी. दूर उत्तन -गोराई रोड़ पर स्थित किसनगोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम पिछले ५ वर्षों से वरिष्ठ नागरिकों की सेवा में कार्यशील हैं। वानप्रस्थाश्रम में ८ कमरों युक्त सर्वसुविधा संपन्न द्वितीय निवासी खंड भी बनकर तैयार हो गया है।

विशेष

१. पूर्णतः स्वच्छ व स्वास्थ्यप्रद प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण वातावरण।
२. सर्वसुविधा युक्त पूर्ण सुसज्जित निवास व्यवस्था।
३. चिकित्सा सेवा व पूर्ण समय रुग्णवाहिका व्यवस्था।
४. पूर्ण समय पर्याप्त ठण्डे व गरम पानी की व्यवस्था।
५. पूर्णतः सुसज्जित उचित शुल्क पर अपनी सुविधानुसार अलग-अलग श्रेणी की निवास व्यवस्था।

वानप्रस्थाश्रम कार्यालय – २८४५०१५८

श्री योगेंद्र राजपुरिया	**श्री. विनय नाथानी**
२६११५४१८ ९८२००६१०८६	९८१९३३३५५९

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
श्री. परेश देशपांडे, श्री. लालचंद जणवा

वसई जनता सहकारी बँक लि., वसई

बँकेचे विद्यमान व्याजदर

१५ ते ४५ दिवस	४.००%	४६ ते ९० दिवस	४.५०%
९१ ते ३६४	६.५०%	१ वर्ष ते २ वर्ष	८.००%
२ वर्षावरील ते ३ वर्ष	६.५०%	३ वर्षावरील ते ५ वर्ष	७.००%

५ वर्षावरील ठेवींसाठी ७.५०%

नोंदणीकृत संस्था व ज्येष्ठ नागरीकांसाठी १.००% ज्यादा व्याजदर

रु. १५.०० लाख व त्यावरील मुदत ठेवींसाठी नियमित व्याजदरापेक्षा ०.२५% ज्यादा व्याजदर.

धनसमृद्धी ठेव योजना

ज्येष्ठ नागरिक व नोंदणीकृत संस्थांसाठी व्याजदर १०.५०%

सर्वसामान्यांसाठी व्याजदर १०%

मुदत १५ महिने

सदर योजना मासिक/त्रैमासिक व्याज या योजनेअंतर्गत अदा करणेत येईल.
किमान गुंतवणूकीची रक्कम रू. १००००/- पुढे १०००/- च्या पटीत.

*(अटी लागू)

आपल्या पाच शाखांसह ग्राहकांच्या सेवेस सदैव तत्पर!

वसई	९५२५०-२३२४०१४	भाईंदर (पूर्व)	९५२२-२८०४२१५३
निळेमोरे	९५२५०-२४०२२४५	बोईसर	९५२५२५-२७३३९७
नवघर (पूर्व)	९५२५०-२३९२५३१	तुळींज विस्तारकक्ष	९५२५०-२४३२२८६

Achievements of Ram Ratna VidyaMandir Central Sector Scheme of Scholarship For College and university students

Two students from the school Master Niraj Jain and Master Nirav nagaria are selected for the above scholarship scheme. They scored 88% and 87.4% respectively in 2008 CBSE board Exam. The commerce faculty members are delighted for this achievement. These boys have done hard work and practiced thoroughly throughout the year. Regularity and consistency are the secrets of their success. Rigorous efforts of the teachers, motivation helped students to cope up with the studies and balance between school and extra curricular activities. This is a real achievement for the students as it's a honor to be a part of the few selected candidates for their bright performance in studies.

Details of scholarship : The Ministry of Human Resources Development, Department of Higher Education, Government of India has introduced a new scholarship scheme titled **"Central Sector Scheme of Scholarship for college and University Students"** with the objective to provide financial assistance to meritorious students from low income families to meet day-to-day expenses while pursuing higher studies.

Scope : The scholerships are awarded on the basis of the results of Senior Secondary Examination (class XII) of 10+2 pattern or equivalent. 82000 fresh scholerships per annum (41000 for boys and 41000 for girls) are awarded for graduate / postgradute studies in colleges and universities and for professional courses such as Medical, Engineering etc. The student should have scored a minimum 80% of marks in Class XII of 10+2 pattern or equivalent.

Rate of Scholerships : The scholarships are given @1000/- per month at Graduation level for first three years of College and University courses and Rs.2000/- per month at Post graduation level. Students pursuing professional courses get Rs.2000/- per month in the 4th & 5th year. The scholarship is paid for 10 months in an academic year.

A scholarship under the scheme is renewable from year to year within the same stage of education. The renewal depends on promotion to the next class provided the scholar secures 60% or more marks in aggregate in the semester / annual examination which determines his promotion to the next class. It is also subject to discipline and maintenance of attendance by the scholar. School is having proud to have such students; encouragement is given by the principal and commerce teachers to the students to lead in the field by taking up such an opportunity to shine in academic area through overall development.

Commerce Department, RRVM

Annual Sports Day

The Annual Sports Day of Ram Ratna vidya Mandir was conducted on 30th November 2008 from 2.20 pm to 6.30 pm on the school playground. Athletics, Aquatics, Football, Volley Ball, and Hand Ball.

- The chief guest of the day was Ms. Tejasvini Sawant, the ace Indian Shooter. The event began with lighting of lamp by the chief guest, Chairman, vice-chairman and Principal. The School Capt. Master Surya Tejja Reddy & Vice capt. Mast Dishant Goyal Commanded the withole parade March Past & Mass PT for all Students House Wise Guided by the sports and all House Teachers. Class 4th & 5th Students Performed yogik Jogging on Music guided by Mrs. Ujjwala Gophane. Class 6th Students Performed Musical Instrument that is RRVM Band Platoon. Class7th students performed Gymnastics & Mallkhamb with Master Ajinkya Pargaonkar of Class 11th Sci. Guided by Mr Pargaonkar, Ramnaresh Yadav, Mr. Mahendra Upadhyay. Class 8th students performed Combat Games Guided by Mr Shahaji Gophane. Class 9th Students performed Lezim with march-past. Class 11th students performed Fitness through Dance with music Guided by Choreographer, Mr. puran, Mr. Kuntal Mukharjee & Paresh Sonigra. Event Managed by Mr. Vijay Kumar Bukke Gen. Sec. of Sports RRVM.It was an interesting affair.

Vijay Bukke
Gen. Sec. of Sports, R.R.V.M.

"Career guidance is a success mantra" guest of the month Dr. B. V. Rao

Career guidance is a basic requuirement for success. For the career guidance, every month Ram Ratna vidya Mandir organises a lecture for the students.

for the month of December 2008, the guest of month was Dr. B. V. Rao. He is Research Scientist, a Technocrat turned outstanding professor of chemistry. He has also establised RAO IIT Academy at Kota, where he caved the career of more than ten thousand students for over two decades by enabling them to take berth in various IIT so far and continuing the journey as a crusade.

Dr. Rao said that Residential School is an approprite place to setup the mind to achieve our goal. He explained how one can achieve his goal, by giving few mantra.

- Study every subject every day and complete all the task that day itself, i.e. complete the given task in class room itself.
- Never study on bed. (one hour work in bed you do in trhee-to-four- hours).
- Don't keep unnecessary books on study table.
- Make doubt note book and note down doubts, next day ask respective teacher.
- Use 'no' less in life. (A job if someone can do, you too can do.)
- Make some one role model.

He illustrated an example of himself as he belonged to a farmer family from very small village, with hard work achieved a lot. He has also guided class XII Science students how to prepare and revise in remaining few months for IIT-JEE.

The Principal Mrs. Anita Sahu thanked him for his precious guidance to the students. Vote of thanks was given by master Kinshuk Tripathi (XII, Science).

Overall it was indeed a fruitful experience for the students.

Yadav Santosh, Department of Maths.

A Guest to Reminisce

Ram Ratna Vidya Mandir had the immense pleasure to have Indian ace shooter, Miss Tejaswini Sawant as the Chief guest for its 12th annual sports event.

Born on 12th September, 1980, she is from Kolhapur, Maharashtra. An active player of Basket ball and Tai Kandu, she was an excellent also in NCC throughout her student life.

In 2006, she won gold medals in womens 10m Air Rifle singles and Women's 10m air Rifle Pairs, events at the Commonwealth games at Malbourne. Last year in Gohati at National games she broke all the records with 6 gold medals. Since past 3 yrs, she has been winning the Australia Cup. Continuously she received 6 gold medals in the 50th National Champ 2006-07 and achieved **"Champion of Champion Awards".**

In total she has won 66 medals — 40 gold & the rest silver and bronze.

In her speech to the students she congratulated them and encouraged them to make sports a way of life she urged the parents to encourage & motivate their wards in sports especially the girl child. She mentioned that last 3-4 days she was in Pakistan participative in 4th South Asian shooting Champ, in Islamabad, where she won 1 Gold, 1 Silver and 1 Bronze.

"One needn't be in army or join any such force to prove patriotism - but through sports as well a person can make his/her country proud," she said after recounting her experience in Pakistan admist the Mumbai Terror Attacks. She feels elated when she mentions that inspite of the animosity between the two nations, she was treated very well and while she was awarded, everyone there saluted and gave due honour to our National Flag and our anthem.

A very humble and modest personality she was indeed the star of the event, a true sports person being an epitome of punctuality, hardwork and discipline.

Ram Ratna Vidya Mandir truly based in her glory and is proud to have had her as its chief guest.

Mrs. Sabita Shinde, H.O.D. English

रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी

दिसंबर मासिक प्रतिवेदन

क्र.	दिनांक	कार्यक्रमों के नाम	वक्ता	सहभागियों की संख्या	स्थल	समय
१.	५ दिसंबर २००८	सद्यःस्थिती और हम (परिचर्चा)		२०	चंचल स्मृती, दादर	१ दिन
२.	१३-१४ दिसंबर २००८	सोलापूर जनता सहकारी बँक शाखा व्यवस्थापक, वरिष्ठ लिपीक, कनिष्ठ अधिकारी प्रशिक्षण शिविर	अरविंद रेगे, अनंत जोशी		सोलापूर	२ दिन
३.	१५ दिसंबर २००८	संस्था बांधणी सहयोग योजना-सांगता समारोह	श्री. नारायण चांडक, डा. अशोक कुकडे, डी.एस. कुलकर्णी	१२५	एस.एम. जोशी सभागार, पुणे	१ दिन
४.	२०,२१ दिसंबर २००८	भाजपा चारकोप विधानसभा कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग		८७	ज्ञान-नैपुण्य केंद्र	२ दिन
५.	२६ दिसंबर २००८	आतंकवाद से दो हाथ	ले. जन. विनायक पाटणकर व्ही.एन. देखमुख, गोपीनाथ मुंडे	४००	नागपूर	१ दिन
६.	२७, २८ दिसंबर २००८	श्रीकुलस्वामी को. ऑ. क्रे. सोसायटी लि. मुंबई प्रशिक्षण वर्ग	अरविंद रेगे, अभय कामत, रत्नाकर गावस्कर	१९	ज्ञान-नैपुण्य केंद्र	२ दिन